त्रिलोक सिंह ठकुरेला

ऐसा रस बरसाओ

भोर हुई, सूरज आ बोला -
बच्चो अब जग जाओ ।
चिड़ियाँ कहने लगीं चहककर,
मीठे सुर में गाओ ।।

कलियों ने मुस्कान बिखेरी,
बोलीं- तुम मुस्काओ ।
गंध लुटाकर सुमन कह उठे-
तुम भी गंध लुटाओ ।।

सुख से भरी हवा बह बोली -
मिलकर सुख बरसाओ ।
जो भी मिले, खुशी से भर दो,
सबको गले लगाओ ।।

सबने कहा एक ही सुर में,
सबको ही सरसाओ ।
सरस बने सबका ही जीवन
ऐसा रस बरसाओ ।।

नन्ही चुहिया

बिल से बाहर झांक रही थी,
नन्हीं चुहिया रानी ।
तभी अचानक बिल्ली आई,
वह थी बड़ी सयानी ।।

चुहिया देखी तो झट
उसके मुँह में पानी आया ।
बिल के पास खड़े हो उसने
चुहिया को समझाया ।।

मौसी हूँ मैं सगी तुम्हारी
बहुत दूर से आई ।
बिल से बाहर निकलो प्यारी
दूँगी तुम्हें मिठाई ।।

चुहिया बोली- मौसी!
मेरी मम्मी कहीं गयी है ।
मुझको तेज बुखार चढ़ा है,
मुझको भूख नहीं है ।।

मैंने अभी दवाई ली है,
मुझे नहीं कुछ खाना ।
जब मेरी मम्मी घर आये,
मौसी तब तुम आना ।।

तुम्हें देखकर धक धक होती
मौसी मेरे दिल में ।
इतना कहकर नन्हीं चुहिया
भागी अन्दर बिल में ।।

 ISSN:2583-8849